पुरोवाक्

साहित्य की समस्त विधाओं में उपन्यास सबसे अधिक प्रचलित और लोकप्रिय विधा है। उपन्यास-साहित्य का क्षेत्र काफी फैला हुआ होता है। समाज में जो कुछ भी घटित होता है वह भले ही साहित्य के अन्य विधाओं की पकड से बच जाए लेकिन उपन्यास की नजर से बचना मुश्किल है। जीवन और जगत् की भाषिक अभिव्यक्ति का दूसरा नाम है उपन्यास। हिन्दी उपन्यास साहित्य में महिला उपन्यासकारों की विशेष योगदान रहा है। महिला उपन्यासकारों की आगमन ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक नया रूप प्रदान किया है। नारी जीवन की समस्याओं, उनकी मनस्थितियों, नारी के तनावों, उनकी मुक्ति कामना आदि को महिला उपन्यासकारों ने जितनी सूक्ष्म और मार्मिक अभिव्यक्ति दी है, वह अत्यन्त दुर्लभ है।

आधुनिक युग में 'स्त्री-विमर्श' विषय ने जहाँ स्त्री के व्यक्ति स्वातंत्र्य को उभारा है। वही उसके जीवन से संबन्धित असंख्य जटिलताओं को शामिल किया है। आधुनिक युग में भी स्त्री के अपनी इस दयनीय स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। नारी जीवन के समस्याओं, उनकी जीवन संघर्ष, स्त्री-पुरुष संबन्धों में बदलाव आदि से आज स्त्री विमर्श को विश्व साहित्य में विशिष्ट स्थान मिला है। समकालीन लेखिकायें और लेखकों ने भी स्त्री विमर्श को आधार बनाकर अनेक रचनायें कर रहे हैं। इस कोटि में मेहरुन्निसा परवेज़ का नाम उल्लेखनीय है। मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के साथ-साथ शोषितों और पीडितों के प्रति सहानुभूति भी मुख्य विषय के रूप में अभिव्यक्त है।

इस शोध प्रबन्ध का विषय है **"मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में चित्रित स्त्री और शोषित वर्ग।"**

प्रथम अध्याय **"साठोत्तरी उपन्यास - 'उपन्यास के तत्व'"**। इस अध्याय में उपन्यास के अर्थ एवं तत्वों का अध्ययन किया गया है। इसके साथ साठोत्तरी उपन्यास के प्रमुख प्रवृत्तियों और विशेषताओं का चित्रण करके उस समय के प्रमुख उपन्यासकारों का परिचय भी दिया गया है।

दूसरा अध्याय **"मेहरुन्निसा परवेज़ - व्यक्तित्व एवं कृतित्व"**। इसमें मेहरुन्निसा परवेज़ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया है। साथ-साथ उनको मिले सम्मान एवं पुरस्कारों के बारे में परिचय दिया गया है।

तीसरा अध्याय **"मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में स्त्री"**। इसके अंतर्गत नहीं के विभिन्न रूप और उनकी समस्याओं का चित्रण किया गया है।

चौथा अध्याय **"मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में शोषित वर्ग"**। इसमें शोषितवर्गों के समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय **"मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में भाषा शैली"**। इसमें विवेच्य उपन्यासों की भाषा एवं शैली के अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है।

पाँच अध्यायों के विवेचन विश्लेषण से प्राप्त नवीन दृष्टि को सार रूप में उपसंहार में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध सेन्ट तेरेसास कॉलेज के अध्यापिका डॉ. हेलन के.जे. के निर्देशन में संपन्न हुआ है। मेरी गलतियों को सुधारकर समय-समय पर उन्होंने उपदेश और परामर्श देकर मेरा मार्गदर्शन किया। उनके उपदेश और परामर्श से ही मैं यह शोध

कार्य पूरा कर सकी हूँ। इसके लिए मैं उनके प्रति आभार रहूँगी और सच्चे मन से उनको धन्यवाद अर्पण करती हूँ। महाराजास कॉलेज एरणाकुलम के प्राचार्य के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने आवश्यक सहायतायें की है। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मधु.वी, एवं विभाग के अन्य अध्यापकों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ। जहाँ यह शोधकार्य संपन्न हुआ है।

मुझे इस शोधकार्य के लिए विभिन्न पुस्तकालयों से सहायता मिली है। महाराजास कॉलेज एरणाकुलम, कोच्चिन विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय कालडी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा एरणाकुलम, पब्लिक लैब्रेरी आदि इनमें प्रमुख है। इस पुस्तकालयों के अध्यक्षों के प्रति मैं आभारी हूँ और सच्चे मन से हार्दिक धन्यवाद अर्पण करती हूँ।

इस शोधकार्य के आरंभ से लेकर अंत तक मेरे परिवारवालों एवं मित्रों की सहयोग सदैव रहे है, जिन्होंने शोध कार्य करने में मेरी हिम्मत बढ़ाती रही। अतः उन लोगों के प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में जिन लोगों से मुझे शोध प्रबंध लिखने में सहायता मिली है, उसके लिए उन लोगों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध प्रबंध में व्याकरणिक एवं संरचनात्मक त्रुटियाँ रह गयी हो तो उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

विनम्र

प्रसीजा एन.एम.
हिन्दी विभाग
महाराजास कॉलेज
एरणाकुलम

स्थान : एरणाकुलम
तारीख :